बचपन का सपना

सर्कारी स्कूल तिरुवित्तांकूर के आखिरी असंब्ली चल रहा है। प्रार्थना शुरू हो गया और फिर स्कूल लीडर के प्रतिज्ञा। लेकिन सबी बच्चों के आँखों में पहली बार इतना उत्साह दिख रहा है। सबी छात्रों असंब्ली खत्म होने का इंतज़ार में है। बात असल में सिर्फ इतनी है कि आज उनके परीक्षा का रिज़ल्ट आनेवाला है। सबी छात्रें उसके इंतज़ार पर है। जब असंब्ली खत्म हो गया, तो सबी छात्रें रिज़ल्ट देखनेकेलिए ऑफीस के सामने खड़ा है। सबी छात्रें उनके रिज़ल्ट देखकर खुशी से गया। लेकिन ~~अपस्ना~~ अक्षया सबसे पीच्छे वही रही। सबी बच्चे जाने के बाद वह अपनी रिज़ल्ट देखी। वह इतनी खुशी हो गई कि उसे लगी कि उसकी चेहरा गुलाब की तरह लाल हो गई है। वह जल्दी अपनी क्लास तक दौड़ी। वह इतनी खुशी थी कि उसको अपनी-आप की मुस्खुराहट रोखा नहीं जाता।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

जब स्कूल के आखिरी घंडी बजी तो उसने घर तक तेजी से दौड़ा। उसकी हाथ रास्ते में दौड़ते समय एक दीवार पर थड़कर छोट लग गया। लेकिन वह उस छोट के बारे में नहीं सोचा। उसे ऐसे लगा कि उसकी दिल में फूलों का बौछार खिली हो। वह घर पहुँचते ही अपनी माँ को ज़ोर से आलिंगन किया। माँ ने आकांक्षा से कहा "अरे छोरी, क्या हुआ? बहुत खुश दिख रही हो।" अक्षया ने कहा, "माँ, मुझे स्कूल में दसवी कक्षा के परीक्षा में पहला पुरस्कार मिला है। माँ हैरान होकर कहा, "अरे मेरे प्यारे दुलहल, तुमने मुझे इतना बड़ा तोफा दिया।" अक्षया, "हाँ माँ। मैं जाकर सबसे कह देता हूँ।" उसने सीधा उसकी बुआँ की घर गया। वहाँ सब यह सुनकर खुश हो गया। बुआँ की छोटी बच्ची अक्षया से पूच्छा, "अब आप कास पर नाएँगी दीदी! अगर पैसे मिला तो मुझे एक बड़ा सफेद भालू को खरीदकर दूँगा क्या।" उसे आकांक्षा हुआ। तब अक्षया बोली, "अरे, मेरी नन्ही प्यारी अब और पड़ना है, तब ही कास मिलेगा।"

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 642 Participant Code: 112

तब बुआँ आश्चर्य होकर कहा, "अरे अब तुम क्यों पढ़ रही हो। तुम पराई हो। तुम्हें ~~ब~~ बस तुम्हारी पती के घर के खयाल रखना है।" अक्षया पूछा "अरे बुआँजी अगर मैं काम पर गया तो भी क्या ~~होग~~ होगा।" बुआँ गुस्सा हो गई, "अरे लड़की, क्या पति को ज़िंदा रहते कोई स्त्री काम पर जाएगा।" अक्षा दुख हो गई। वह घर जाके सीधा बिस्तर पर लेट गया।

उसे पता नहीं कि क्या करना रोना या हँसना अचानक उसकी माँ आ गई "तुम उदास क्यों हो, यह तो खुशी होने का वक्त है।" अक्षा, "मगर माँ, इससे क्या होगा, मैं तो शादी करके किसी और के घर जाएगा।" माँ कुछ नहीं कहा और फिरसे ~~उ~~ उनकी बर्तन धोने के काम पर लग गया।

दिनों बीत गया। अक्षया को और पढ़ने को नहीं बेजा। वह घर पर माँ की मदद करना शुरू किया। उसकी मन ~~बे~~ में अय.ए.एस पढ़ने का मन था। लेकिन उसकी हालत ऐसी नहीं कि वह उसकी सपना

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

पूरा करें। एक सुबह जब अक्षया पास के घर से सब्जी सब्जी लेने गया था तब उसकी घर के सामने एक कार देखी। वह घर के पीछे से गया, तब माँ को देखा, "अरे बेटी, नेरी शादि के मुलाकात केलिए कोई आया है। अक्षया हैरान हो गया। पिता ने उससे बहूत बात कर रहे थे और तोड़ी देर के बाद वे चले गई।

अक्षया को डर से कुछ कहा नहीं जारहा। अगर वह शादि को न कहा तो उसकी हाथ-पाँव तुड़वा आएगी। इसलिए उसने शादि से नहीं रोका। जैसा ~~उसने~~ उसने सोचा था उसकी शादि जल्दी हो गई। उसकी शादि उतनी बड़ा तो नहीं थी लेकिन जिस घर पर वह जा रहा है वह बहूत दूर था। उसकी पति का नाम सूरज था और वह एक किसान है।

जो घर वह गया था वह उसकी चिंताओं से भी ऊँचा था। उसकी पति के माँ बहूत घुस्सेवाली थी। दिन-रात घर के कामों से उसे आराम करने का

वक्त भी नहीं मिलता है। सालों बाद उन्हें एक बच्ची पैदा हुआ। उसकी पति के परिवार ~~इस~~ उतना खुश नहीं थे। फिर भी अक्षया उस बच्ची को बहूत प्यार किया। उसने बच्ची को नयना नाम दिया। वह होशियार थी। सालों बीत गई और नयना भी।

नयना अब स्कूल में दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है। वह पढाई में खूब महनत करता और अक्सर अक्षया उसे पढा देती थी। नयना को भी अपनी माँ की तरह बनना था और छुटके से वह भी स्कूल पर पहला पुरस्कार पाया। लेकिन असल में नयना को पोलीस बनना था। यह सुनकर अक्षया को दुख हुआ पर उसने नहीं रोखा। लेकिन सबसे बड़ा परेशानी सूरज था। सूरज जल्दी शादि करवाने का ज़िद पर है। लेकिन नयना हिम्मतवाली थी और उसने खुद सूरज से कहा, "पिताजी, ~~मैं~~ और पढ़ना है। मैं अब शादि नहीं चाहता।" सूरज ~~गुस्से~~ मुझे से घर के अंदर गया और बोला, "मुझे तुम्हारी बेटी के पढाई केलिए कोई पैसा नहीं है। मैं किसीका

नहीं रखूँगा। लेकिन मेरा हाथ उसकेलिए एक मिट्टी तक नहीं मिलेगा।"

अक्षया परेशान हो गई। अब कहाँ से पैसे मिलेगा। फिर अक्षया को बस एक ही रास्ता था कि उसे खुद काम पर जाना पड़ेगा। वह घर भर की बर्तन और घर के खिड़की, नीचे और तो और बहूत काम करके पैसे कमाने लगा। अक्षया पढाई केलिए चेन्नै गया। वह सिर्फ उसकेलिए ही नहीं बल्कि उसकी माँ केलिए भी मेहनत कर रहा था। लेकिन परेशानी फिर भी खत्म नहीं हुआ। तिरुवितांकूर के लोग नयना के शादि का इंतज़ार पर था। अक्षया वह सब सहकर नी रहा था।

कबी-कबाड नयना माँ को देखने अपने घर आते थे। लेकिन जब भी कोई रिश्तदार या पड़ोसी उसे देखें तब ही शादि के बाद शुरू करता है। एक बार फूफानी ने उसे डाँटा। "अरे बेवकूफ लड़की, अगर तुम ऐसे ही चलोगे तो तुम्हें शादि करने कोई नहीं आएगा।" अवसर नयना रोता था।

सालों बीतकर जा रहा है और नयना की सेलक्षन का दिन आ गया। वह बहुत घबराहट थी। उसे माँ और परिवार के चिंता थी। वह पहला लिखने वाला परीक्षा में अच्छे मार्क से पास हुआ था। उसे प्राक्टिकल डर है। बड़ी देर के बाद उसकी मौका आ गई। उसने भगवान को दिल से प्रार्थना करके अपना परीक्षा शुरू किया। परीक्षा खत्म होने के बाद उसे डर थी कि कहीं उसने कुछ गलती किया हो।

आखिर उसकी रिज़ल्ट आ गई और उसने दोनो परीक्षा में पास हो गया। फिर उसने कामकेलिए कही पोलीस स्टेषन पर कोशिश किया।

सूरज और अक्षया बूढा हो गया है। सूरज अब कोई काम नहीं कर सकता। अक्षया अकेले घर को संभाल रहा था। एक सोमवार का दिन अक्षया और सूरज घर पर आराम कर रहा था। अचानक एक गाड़ी उनके घर के आँगन के

Item Code: 642 Participant Code: 112

सामने आ गया। अक्षया दरवाज़ा खुलकर देखा तो एक पोलीस जीप उनके घर के सामने खड़ा है। अक्षया आश्चर्य हुआ। इस छोटे से दूर के घर में पोलीस क्या कर रहा है। कहीं सूरज कुछ गलती तो नहीं किया। उसको शराब पीने का एक बुरी आदत है। लेकिन अक्षया के सोच से भी बड़ा चल रहा था। जो दरवाज़े से निकला वह उनके बेटी नयना थी। यह देखते ही अक्षया के आँखों से खुशी की आँसू निकलने लगा।

नयना दौड़कर अक्षया को आलिंगन किया। वह बहुत खुश थे। सूरज अपने बेटी को देखकर रोया और उनसे माफी चाहा। अक्षया दोनों के पैरों ~~चूक~~ छूकर आशिर्वाद लिया। तबी घाडी से एक और व्यक्ति बाहर निकला। वह कोई और नहीं था कलक्टर ~~राम~~ श्री. राम नाथ थी। उन्हें देखकर पड़ोसियाँ तक हैरान हो गया। वह विनय से अक्षया और सूरज से आशिर्वाद ली और घर के अंदर चला।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

अक्षया बहूत उत्साह था और नयना से पूछी कि कलक्टर यहाँ क्यों आया। नयना माँ से आराम से कहा, "माँ, इस राम नाथ मुझे चेन्नै पर सबसे ज्यादा मदद किया था। राम भी मेरी तरह से एक हालत से आया है।" राम, "और माँ हम तब से आपस को बहूत समझ चुका है और हम शादि करना चाहते है। हमें आपकी इजाजत चाहिए।" अक्षया रोकर अपनी बेटी को आलिंगन किया। अक्षया, "मेरी प्यारी नयना मेरी सबसे बड़ा सपना आज तुमने पूरा किया। अब मेरा जिंदगी सफल हो चुका है। उस छोटा सा घर सालों के बाद एक खुश माहोल बन गया है।

बिना वक्त गवाए उनके शादि तय किया। अब सूरज और अक्षया को आराम से जी सकते है। सुबह के उस लाल रोशनी और चिड़ियों के गुनगुनी आवाज से उस सुंदर दिल आ गया। वह उस शहर का सबसे बड़ा शादि था। पूरे

शहर उस शादि पर आया था। बेटी को खुशी से रमा के घर पर भेज दिया। अक्षया सोचा दिनों बीत गई, सालों बीत गई, उम्मीदों बीत गई, वक्त बदल गया लेकिन सपना वही रहा और चालीस साल के बाद वह आखिरी सपना नयना पूरा किया। ज़िंदगी में कबी ~~नहीं हार~~ हार लिया तो भी उससे सीखकर जीना अक्षया अपनी ज़िंदगी से सीख लिया।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)